श्री जिन ज्ञानं पाठशाला

दैनिक कक्षा, स्वाध्याय, प्रतियोगिताएं

तित्थयरवयण

Titthayarvayan

दैनिक ऑनलाइन कक्षा

SUBSCRIBE

ambar192005@gmail.com

9329779375

https://youtube.com/@nayakambarjain?si=XqHzT7lwcrfc55xK

JAIN POEM'S

बाल काव्या

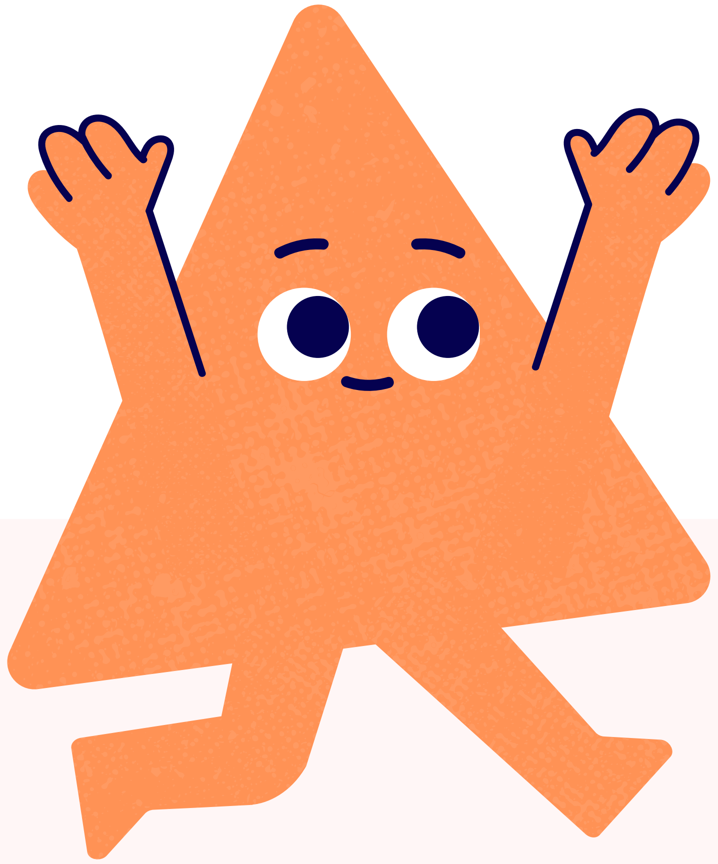

Nayak Ambar Jain

No. 9329779375

सिद्ध प्रभु

सुन सुन चेतन जल्दी सुन,
सिद्ध प्रभु के जानो गुण।
गुण अनंत के धारी हैं,
तीन लोक के स्वामी हैं।
कर्म आठ का नाश किया,
अष्ट गुणों को प्रगट किया।
सिद्धों के गुण गाना हैं,
उन सम ही बन जाना है।

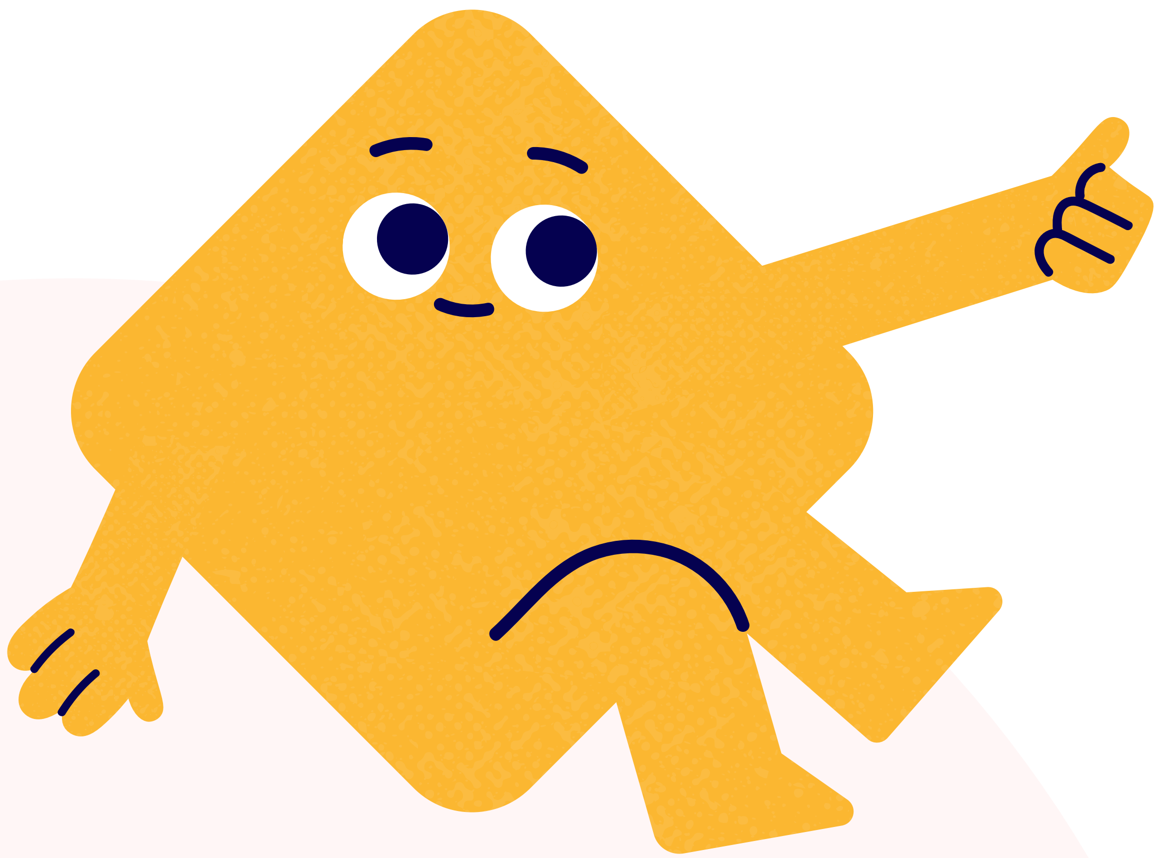

मंदिर जी आओ

आओ जी आओ, मंदिर जी आओ
प्रभु को निहारो, उनको पहचानो।
हम उनको लखते, वे निज को लखते।
हम हैं सरागी, प्रभुजी वैरागी।
दुख हम बताते, वे सुख दिखाते।
सुख है अपने में,न बस सपने में।
हम निज को जाने प्रभु सम बन जाएं।

आईसक्रीम

छोटा सा बच्चा घूमने गया, आईसक्रीम की एक दुकान में रुका।

आईसक्रीम को देखा, रोने लगा, मम्मी ने उसको डांट के कहा

कभी न कभी न कभी न

वो छोटा बच्चा पूछने लगा, आईसक्रीम को क्यों मना करती हो माँ ?

माँ ने बताई उसकी दशा , कितनी बुरी है ये भी कहा.

कभी न कभी न कभी न

आईसक्रीम में कितने जीव हैं पड़े , MSG पाउडर उसमें डले।

नाली के पानी से वो है बने , इसीलिए में तो उसको खाऊं ही न

कभी न कभी न कभी न .....

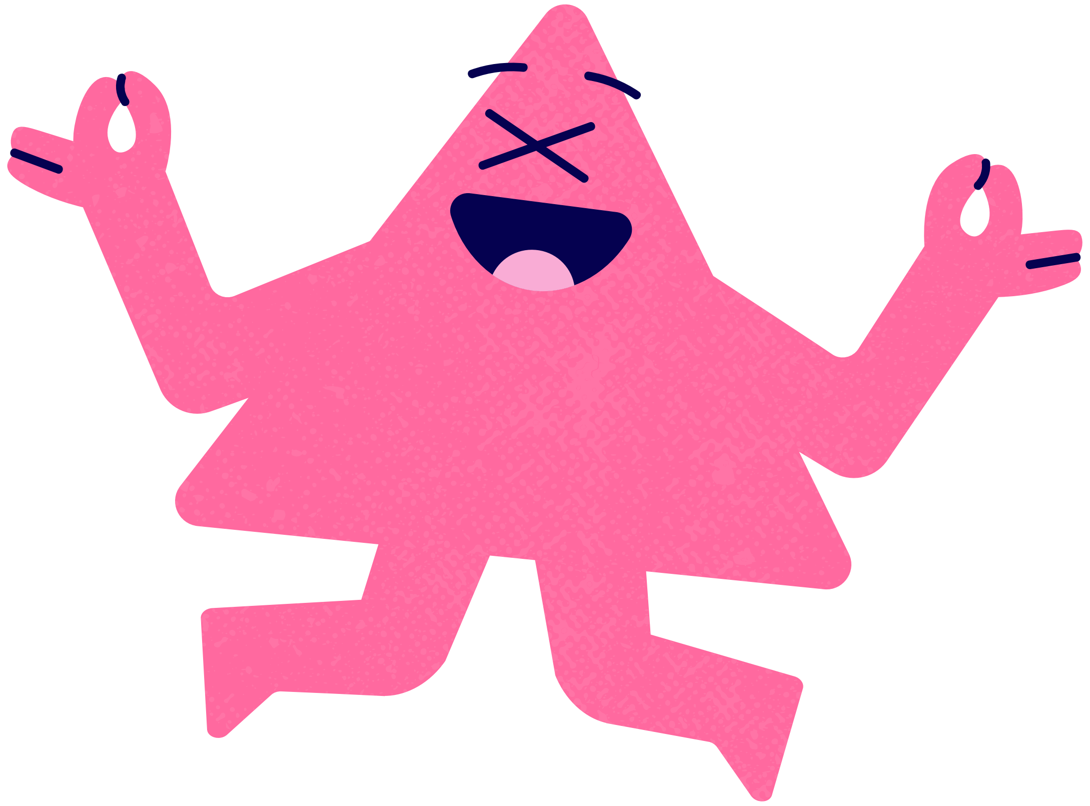

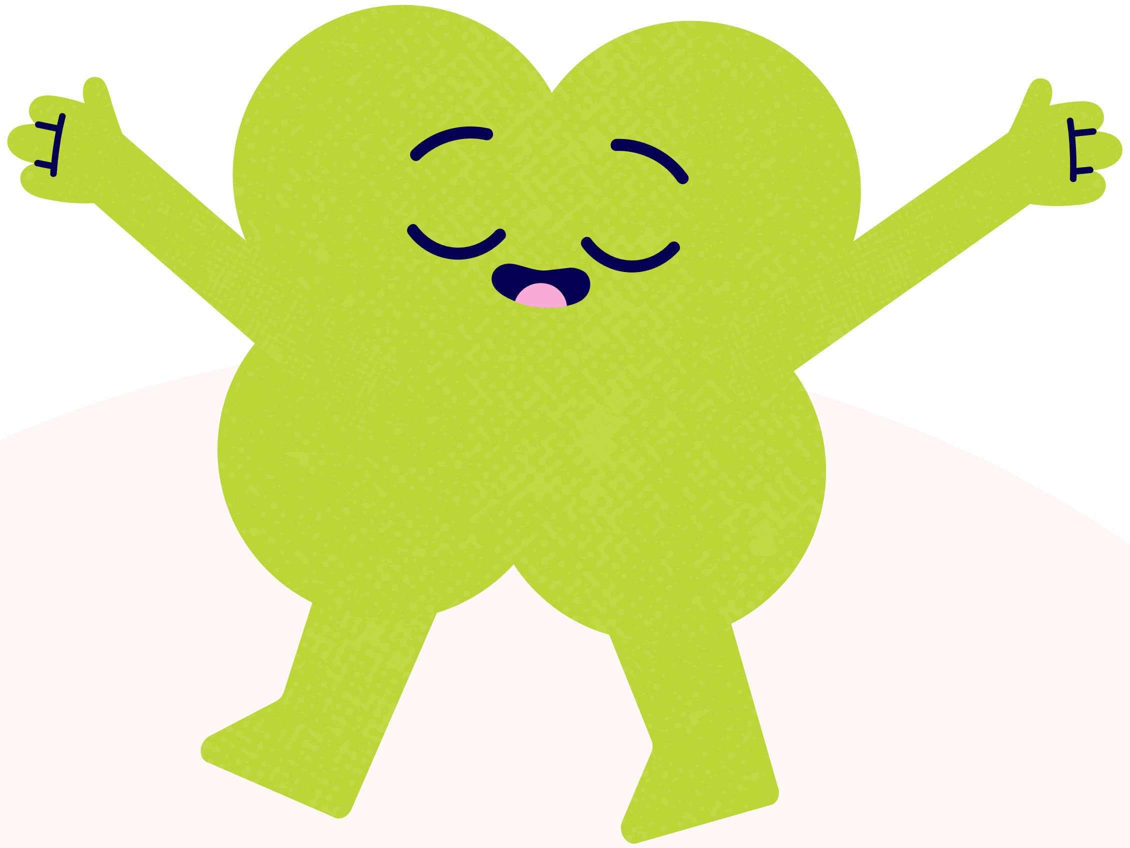

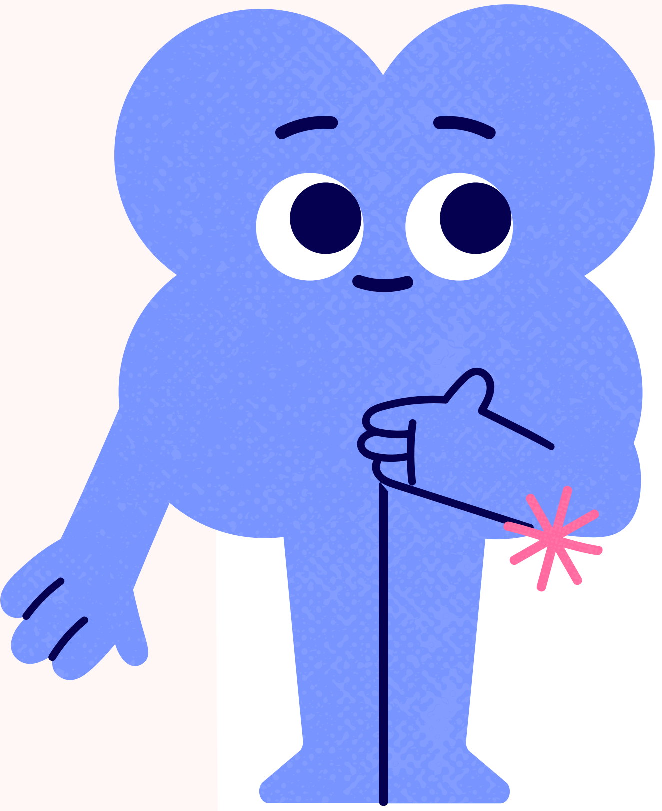

Take selfie with happy face

How can make we happy face ?

Step 1st is क्रोध तजो , क्षमा भाव को ग्रहण करो।

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Take selfie with happy face

How can make we happy face

Step 2nd remove मान, मृदुता is the जग ki शान।

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Take selfie with happy face

How can make we happy face

3rd selfie with aarjava , forgot always maya

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Take selfie with happy face

How can make we happy face

Only take a selfie, होना न है लोभी

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

5.पाप

पांच पाप को जाने क्यों ?
ये जग में ही होते क्यों ?
हिंसा से सब जीव दुखी ,
न हिंसा तो परम सुखी ।
झूठ बोलने बालों को,
हम अपने घर लाएं क्यों ।
चोरी जो जन करते हैं,
बुरा उन्हें हम कहते हैं ।
है कुशील जग में निंदा ,
न साथी कोई रहता ।
परिग्रह करना पाप है ,
बुरे लोग की शान है ।

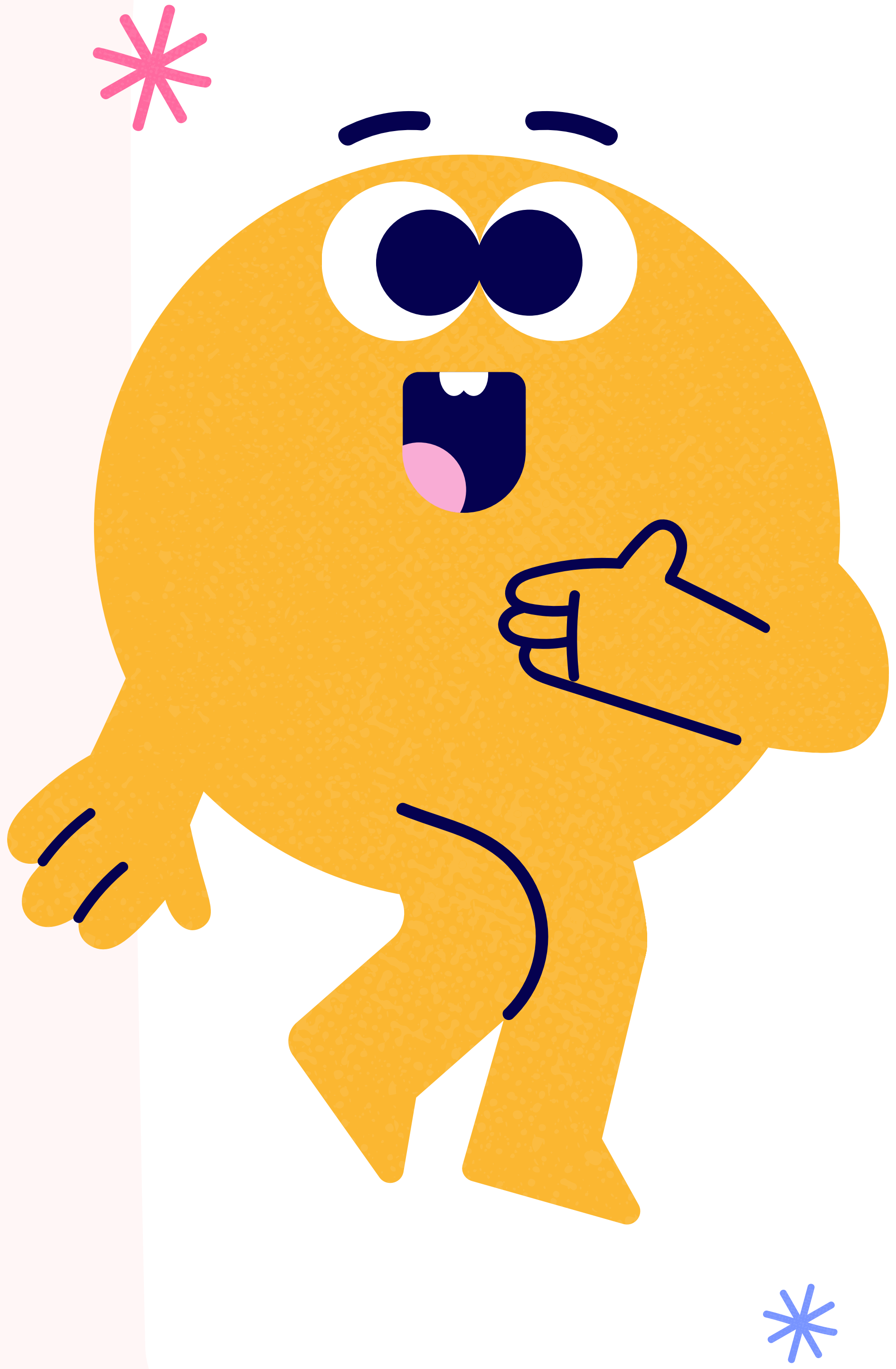

सात तत्व

जीव राजा आते नखरे बहुत दिखाते।
निज को नहीं लखते, बुरी संगत में पढ़ते।
ये तो सबको जाने, सबको ही पहचाने।
इनके दोस्त अजीवा, सदा अचेतन रीता।
इन दोनों की दोस्ती, सदा जीव को कोसती।
जब ये घर को आता, आश्रव तब कहलाता।
है आश्रव दुखकारी, नहीं माने अज्ञानी।
तभी बंध है होता, दुख का बीज है बोता।
ये तो सदा मलिन है, अरु विपरीत चलन है।
जब ये राजन जाने ज्ञानी वो कहलाए॥
संवर तब हो जाता, तोड़ अजीव से नाता।
फिर अजीव घर आए, अरु व्यवहार जताए।
राजा न अपना माने , संवर तब कहलाए।
जब जीव न हंसता, जाने लगता।
निर्जरा वह कहलाते,एक देश खिर जाएं।
कर्म भागने लगते अपनी हार समझते।
पूर्ण नाश जब होता, मोक्ष तभी हो सकता।

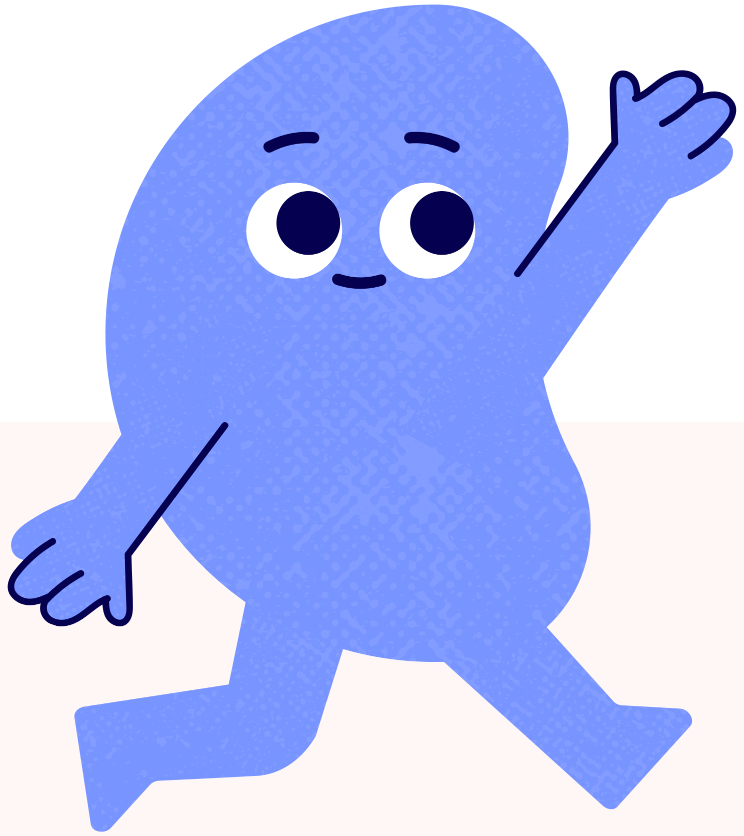

Let's make puzzle of तीन लोक।

how do we make तीन लोक।

Please collect that pieces six.

Then we can it's method fix .

1st Piece is jeeva , तीन लोक में होता ,

2nd पुद्गल Visible , अनंत इसके पार्टिकल्स।

धर्म द्रव्य फिर जोड़ो , अधर्म कहे कि रोको।

आकाश इसका base है , जगह सभी को देत है।

Last part is काल द्रव्य , यह जानो छहों द्रव्य॥

जीव के भेद

चेतन धारी चेतन धारी जो जो जो.....,
उनको जाने आज हम ओ हो हो.......,
संसारी और मुक्त जीव हैं दो दो दो......,
इन दोनों के भेद कहे हैं दो दो दो .....।
प्रभु अरहंता सिद्ध महंता ओ हो हो..... ,
मुक्त जीव का ध्यान करें हम ओ हो हो..... ।
संसारी में त्रस स्थावर ओ हो हो.........,
दु ति चौ पां इन्द्रि वाले त्रस ओ हो...... ।
पृथ्वी जल वायु अग्नि स्थावर हो...
वनस्पति हमको बनना है नो नो नो.... ।
पंच इंद्री हम जैसे हैं जो जो जो....,
कुछ मन वाले , बिना है मन के वो वो वो... ।
इन जीवों के भेद जानना है हमको......,
इनमें श्रेष्ठ सिद्ध पद पाना है हमको...... ॥

रत्नत्रय

चलो चलो चलो चलो मोक्ष महल को जाना है।
काल अनंत वहां पर हमको सिद्ध परम पद पाना है ॥
सम्यक दर्शन पहली सीढ़ी पहले उसको पाना है।
ज्ञान प्राप्त कर निज आतम का मुक्ति बधू को पाना है॥
सम्यक चारित्र सीढ़ी पर जो जल्दी से चढ़ जाता है।
मोक्ष महल में वो बस जाता जग स्वामी कहलाता है ॥

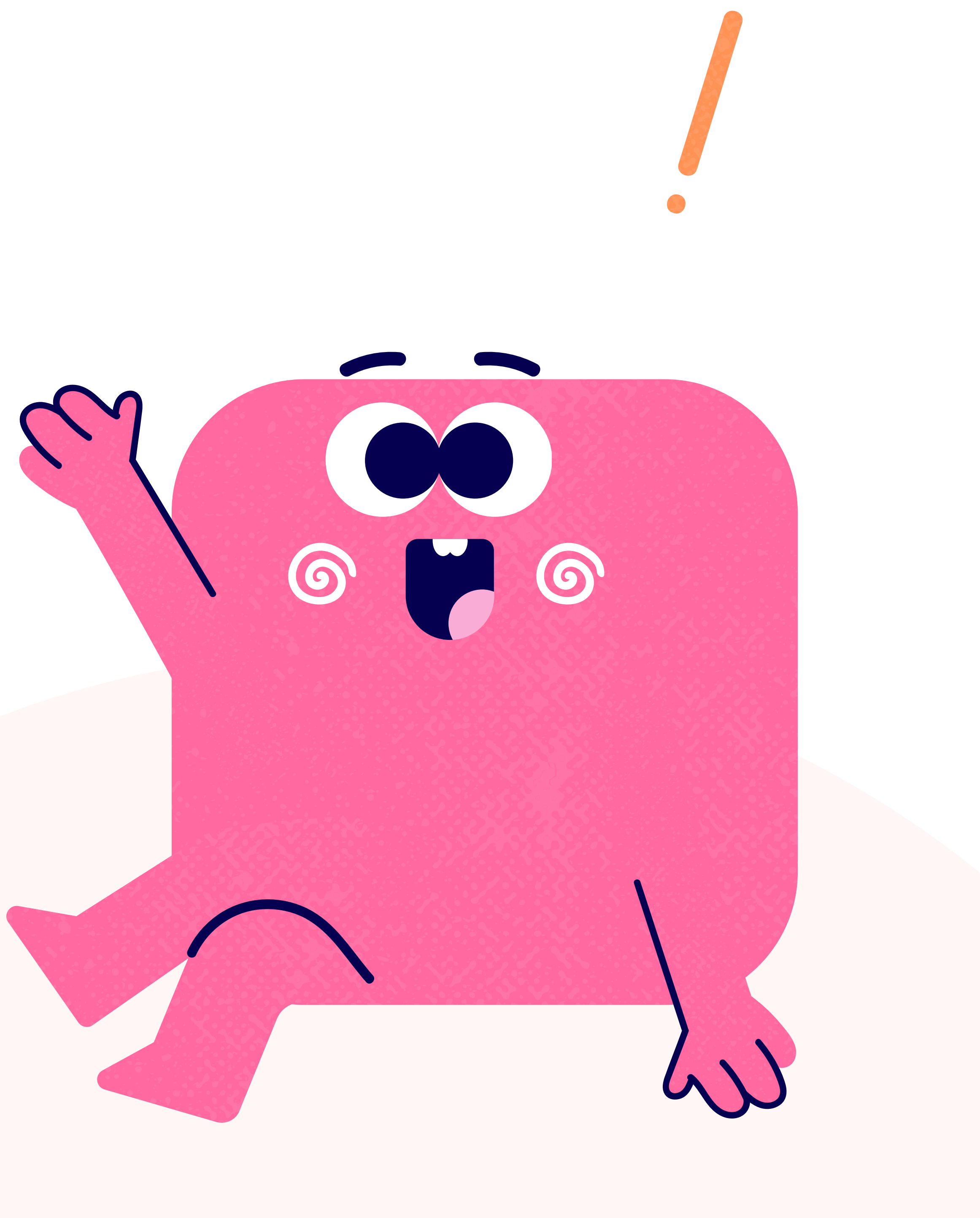

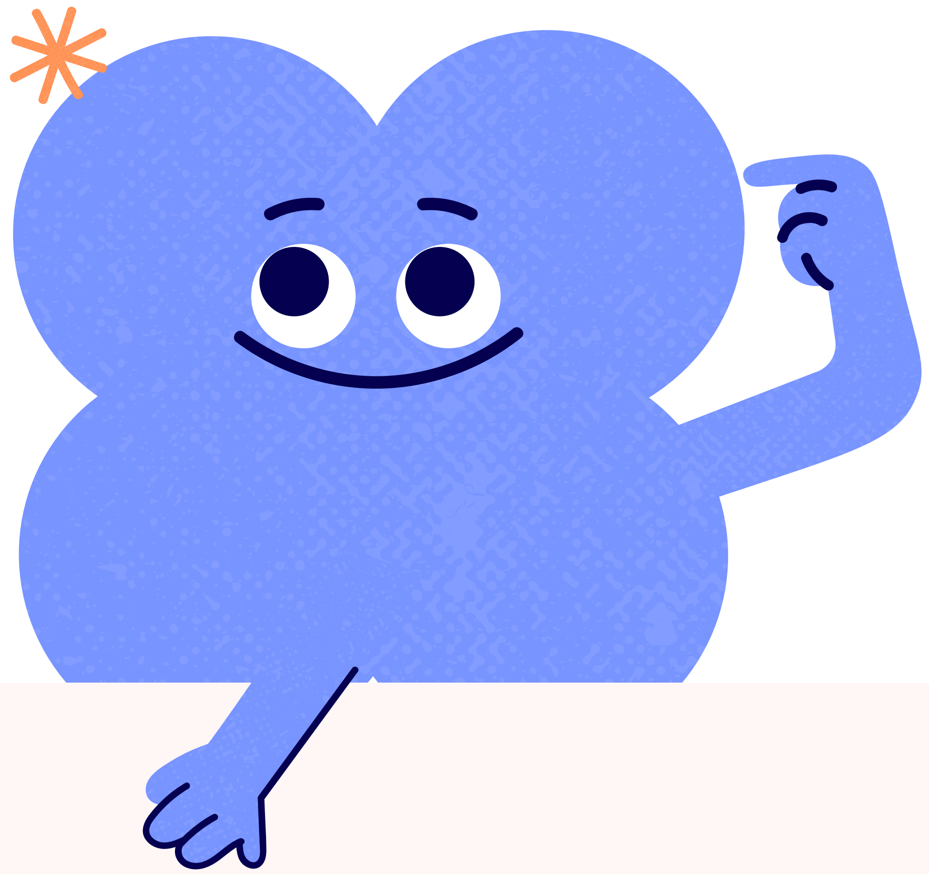

आतम भैया आतम भैया कौन हैं ?
कौने में बैठे भैया जी मौन हैं।
देख जगत की चका चौंध को रो रहे,
पर द्रव्यों के अहम भाव में खो गए।
करना करना दिखता भाई क्यों तुझे,
एक बार तो निज वैभव को लख सही।
गुण अनंत हैं, उनका स्वामी तू ही है,
सबसे अच्छा सुख का धारी तूं ही है।
एक बार बस जानो खुद को आत्मा ,
खुश हो जाओ तज के जग की वासना ॥

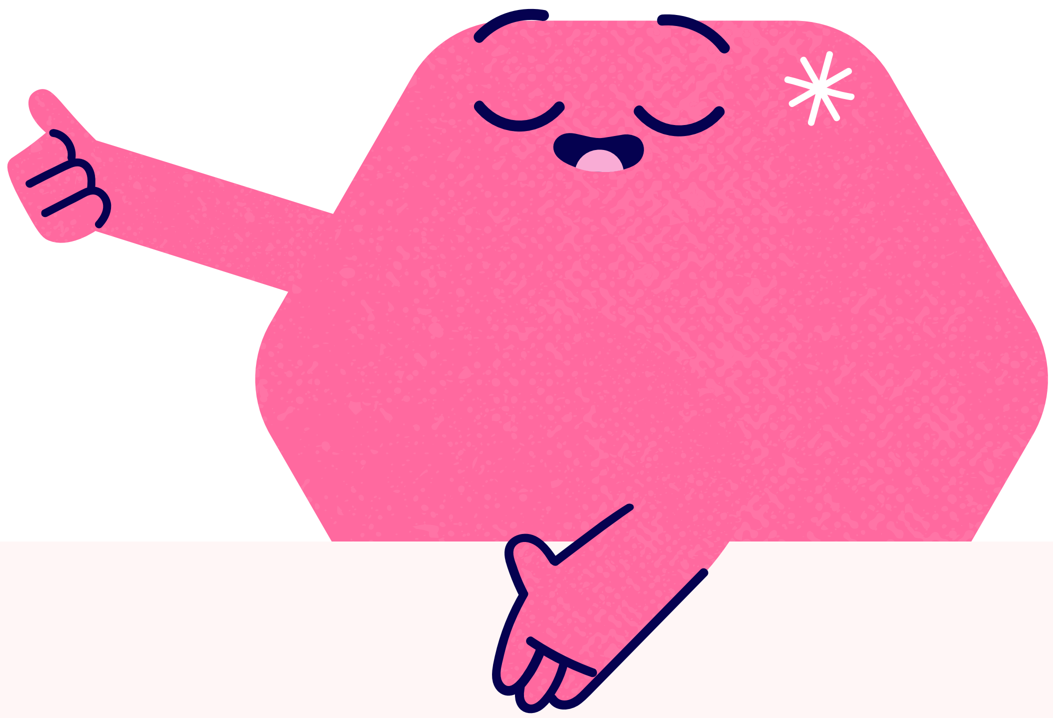

(तर्ज अहा टमाटर बड़े मजेदार)
मोक्ष मार्ग में बढ़ चल भाई — 2
चार गति में बहुत भ्रमाया,
चौरासी चक्कर को काटा,
पर में ही एकत्व लगाया,
कर्तापन का बोझ उठाया,
इन सबको तूं तज मेरे भाई।
मोक्ष मार्ग में बढ़ चल भाई।।

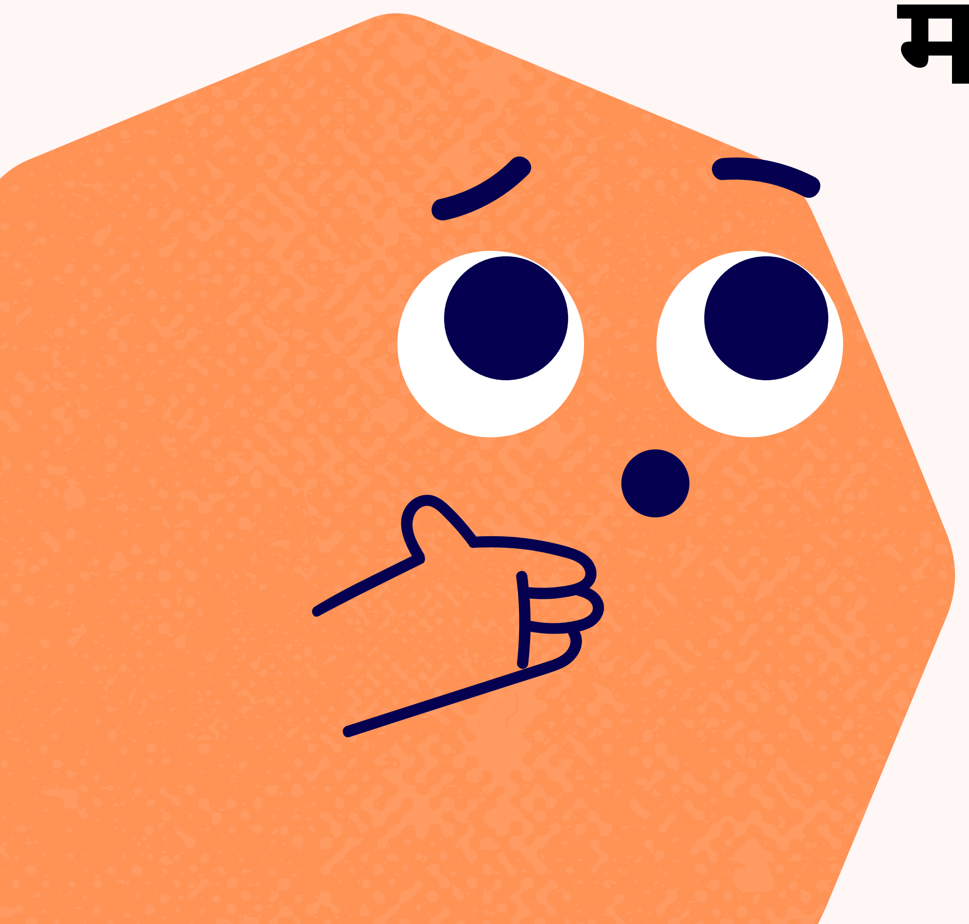

बड़े भाग्य से नर तन पाया,
उसमें भी जिन शासन पाया,
वीतराग का पथ है भाया,
जिनवाणी का मिला सहारा,
जिनवाणी को पड़ मेरे भाई।
मोक्ष मार्ग में बढ़ चल भाई।।
जिनवाणी में ने बतलाया,
निज को जिन का ज्ञान कराया,
पथ निर्ग्रन्थ सहज बतलाता,
मुनिपद पाने योग्य बनाया,
उसी मार्ग में बढ़ चल भाई।
मोक्ष मार्ग में बढ़ चल भाई

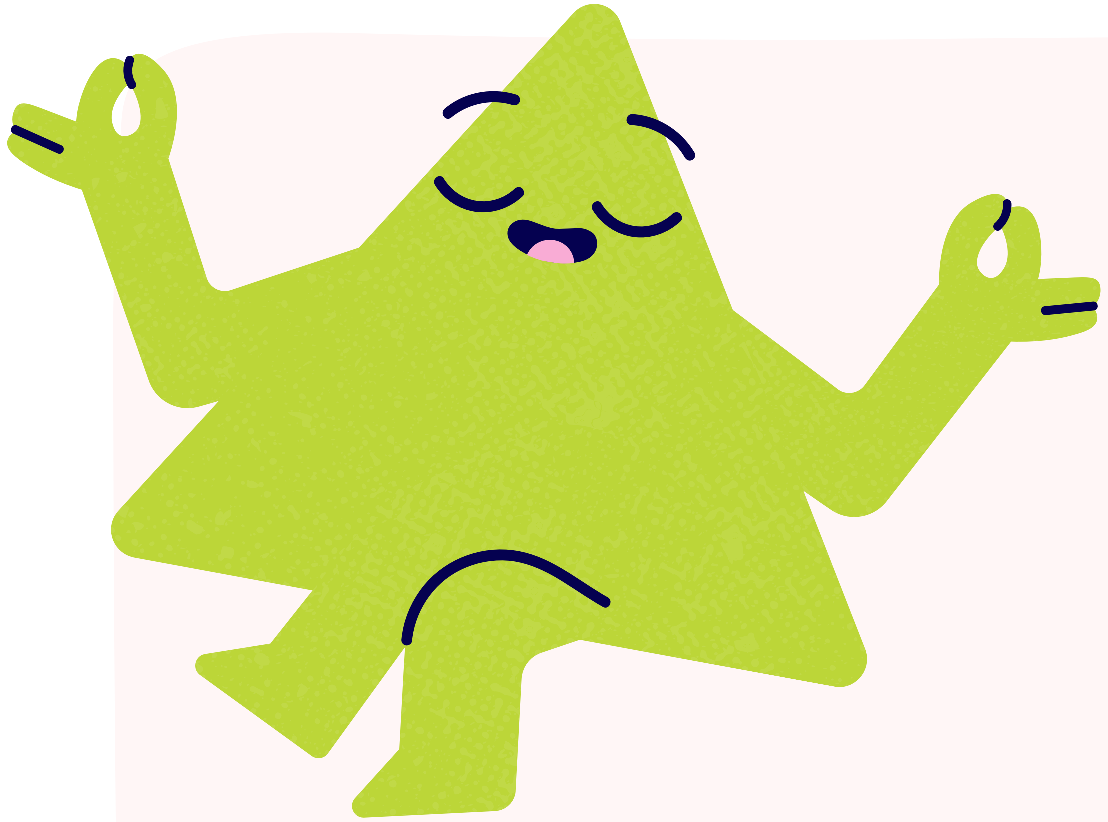

Thank you for listening!

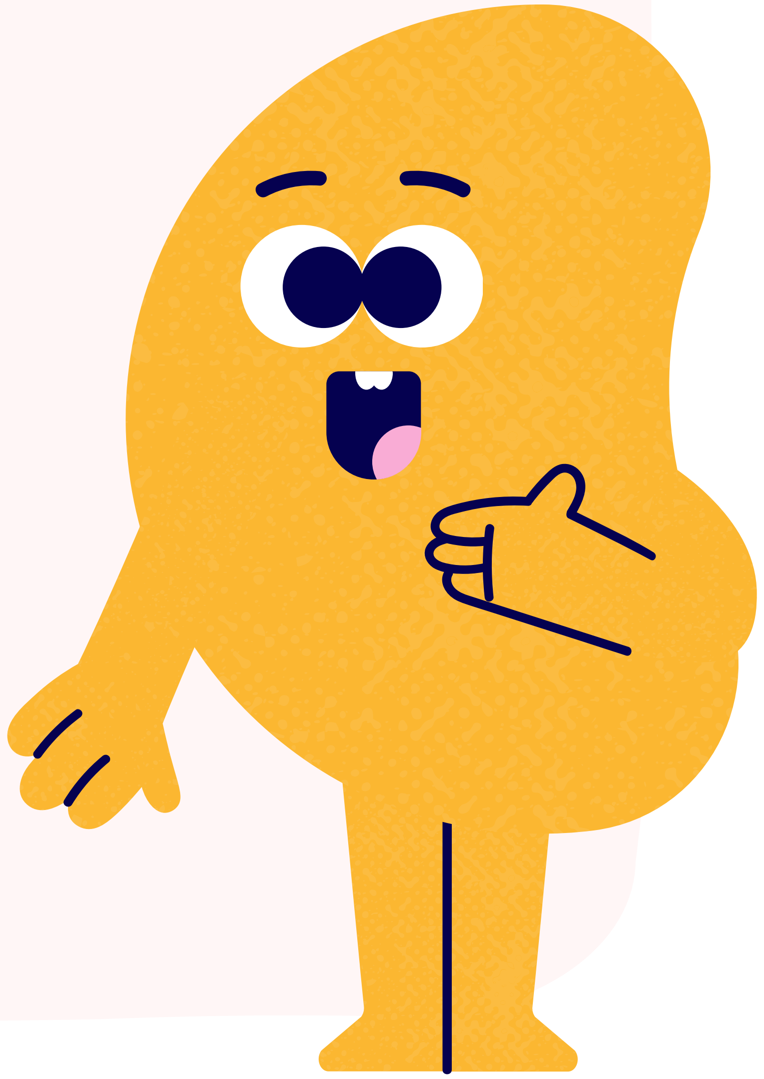

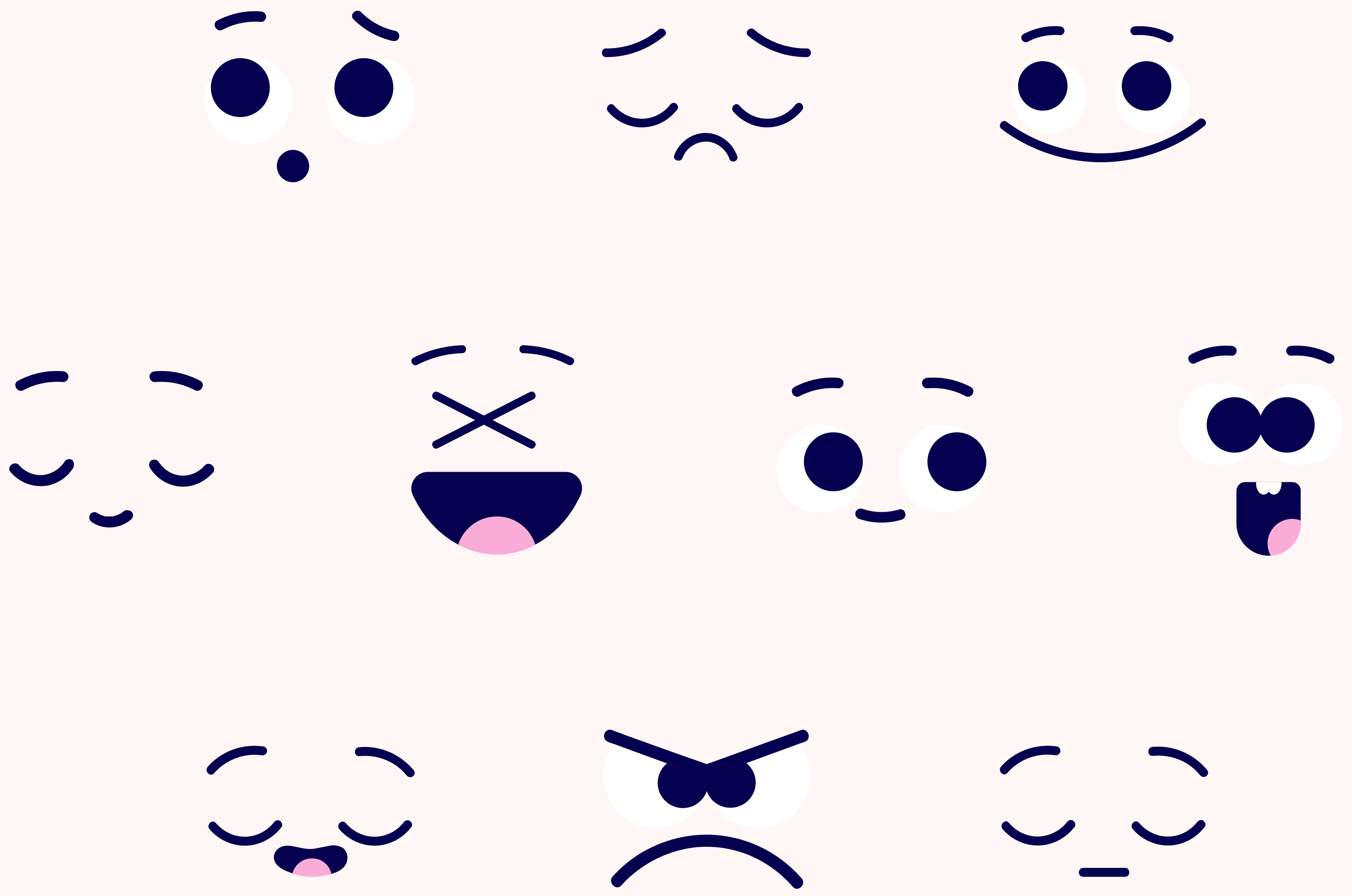

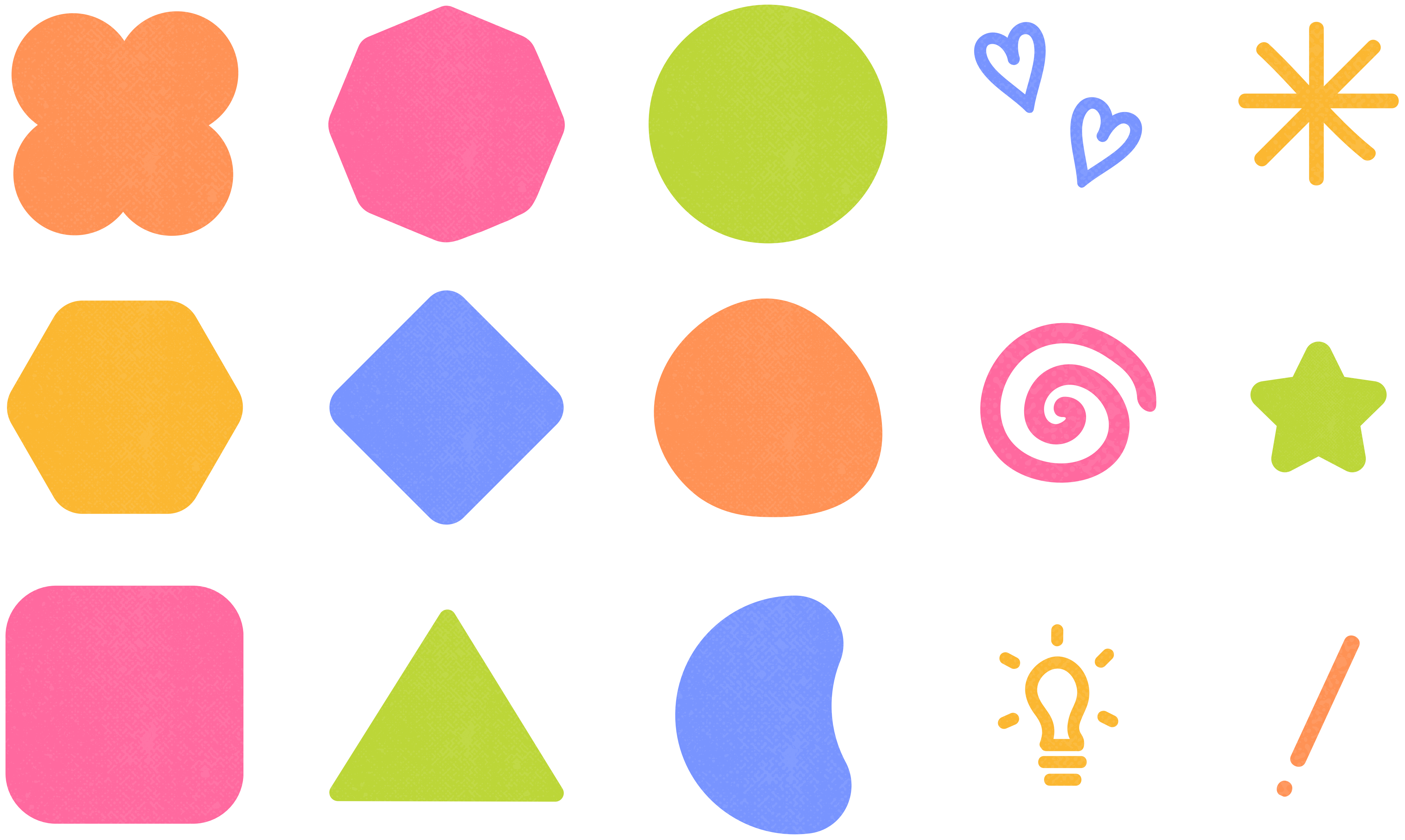

जय जिनेन्द्र